23/7/21
B.A. 1st Sem.
Part I
हिन्दी अनिवार्य

(1)

प्रश्न :— कबीरदास का ** कवि व्यक्तित्व
प्रस्तुत करें।

कबीरदास की व्यावहारिक विशेषताओं का
उल्लेख करें।

उत्तर :— भक्तिकाल के कवियों में ज्ञानाश्रयी निर्गुण
धारा विशेष प्रमुख है। इस धारा के कवियों
में ही नहीं बल्कि हिन्दी के सम्पूर्ण भक्ति साहित्य
में भी सबसे बड़ा कवि कबीर को माना जाता है।
कबीर को कवित्व की अपेक्षा समाज सुधारक
के रूप में ही प्रतिष्ठा मिली है। इसका
मात्र कारण यही है कि कबीर का व्यक्तित्व
उनके कवित्व पर हावी है।

एक ओर वे कट्टर व्यावहारिक
थे तो दूसरी ओर वे भावुक कवि।
उनमें ज्ञान और भक्ति का अद्भुत समन्वय
था। वे कवि के साथ-साथ समाज सुधारक
भी थे। उनके व्यक्तित्व में कवि और समाज
सुधारक का अद्भुत समन्वय था।

कबीर — ये कबीर की उपाधि थी जो उन्हें
उनके विरोधियों द्वारा दी गई थी। कबीर
का अर्थ है — महान। इस उपाधि से ही
उनके व्यक्तित्व का पता चलता है।
कबीर का जन्म सन् 1398 में काशी में
हुआ था। उनके जन्म के विषय में
अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कुछ लोगों
का कहना है कि वे जगद्गुरु रामानन्द
के आशीर्वाद से एक विधवा ब्राह्मणी के
गर्भ से उत्पन्न हुए थे। लोक-लाज के
भय से उस ब्राह्मणी ने उन्हें लहरतारा
नामक तालाब के पास फेंक दिया था।
वहाँ से नीरू नामक जुलाहा दम्पति
उन्हें अपने घर ले आया और उनका
पालन-पोषण किया। कबीर ने स्वयं
कहा है —

"काशी में हम प्रगट भये हैं रामानन्द चेताये"

कबीर का विवाह लोई नामक कन्या से
हुआ था। उनके कमाल नामक पुत्र और
कमाली नाम की पुत्री थी। कबीर
पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने स्वयं कहा है —
"मसि कागद छूयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ"
कबीर ने जो कुछ कहा है आँखों देखा
कहा है। उनकी भाषा में सत्यता की
झलक मिलती है।

कबीर की कविता का मुख्य प्रयोजन
समाज सुधार था। उन्होंने समाज में
व्याप्त अंधविश्वासों, रूढ़ियों, पाखण्डों
और कुरीतियों पर करारी चोट की।
उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों
को फटकारा। उनकी भाषा में
सधुक्कड़ी, पंचमेल खिचड़ी, पूर्वी
हिन्दी, राजस्थानी, पंजाबी आदि
भाषाओं के शब्द मिलते हैं।
कबीर ने जो कुछ कहा है
आँखों देखा कहा है। इसका
प्रमाण है —

क्रमशः —